कंचा - 1/2

टी पद्मनाभन

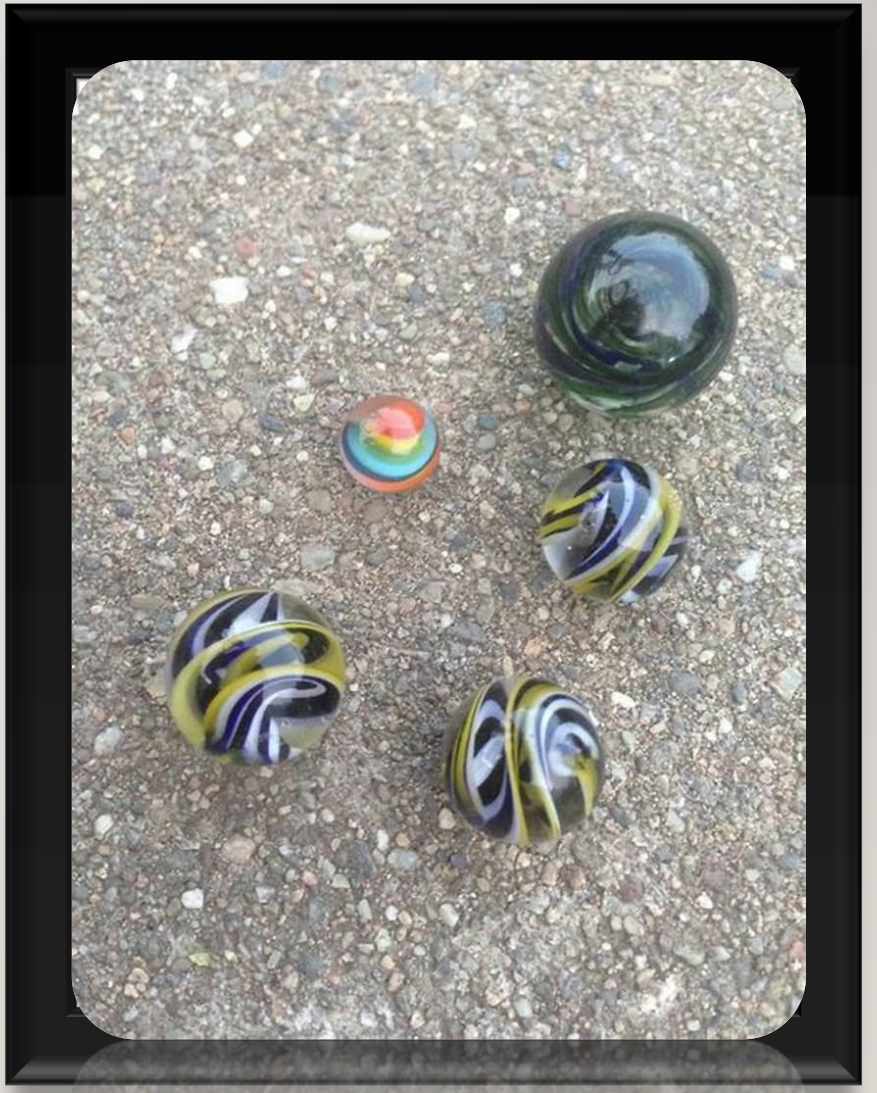

प्रस्तुतकर्ता – सत्यवीर गिरि

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक

परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय क्र.-३, तारापुर

कंचा

टी पदमनाभन जी का जन्म 1जनबरी 1931 ई, को चेन्नई के पल्लीकन्नू ,कण्णूर ,मालावार जिले में हुआ था >इनके पिता का नाम पुथिईदथ कृष्णन अय्यर तथा माता का नाम देवकी अम्मुकुट्टी था। इनके पिता जी का निधन बचपन में ही हो गया था। इनका पालन पोषण इनके माता और बड़े भाई ने किया था। इनकी शिक्षा दीक्षा मंगलौर और चेन्नई में हुई| इनको लघु कहानीकार के नाम से जाना जाता है। इन्होंने वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा थलस्सेरी और कण्णुर कोर्ट में अभ्यास करने लगे । बाद में इनको FACT कंपनी में मैनेजिंग डाइरेक्टर के पद पर नियुक्त किया गया । इनको एज़्हुथचन वल्लठोल वैलर साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुए है । आजकल ये सेवा निवृत्त होकर लेखन कार्य में जीवन गुजार रहे है ।

पाठ का सार

अप्पू का घर से विद्यालय की ओर जाना :- कंधे पर बस्ता लटकाए अप्पू अपने-आप में मस्त विद्यालय की ओर जा रहा था | सियार और कौए की कहानी उसके दिमाग में चल रही थी | सियार ने कौए से कहा - 'प्यारे कौए, एक गाना गाओ न, तुम्हारा गाना सुनने के लिए तरस रहा हूँ |" कौए ने गाने के लिए मुंह खोला तो उसके मुंह में फँसी रोटी का टुकड़ा नीचे गिर गया | सियार रोटी का टुकड़ा लेकर भाग गया | अप्पू अपने आप में हँस दिया | 'बुद्धू कौआ' सियार की चालाकी भी न समझ पाया |

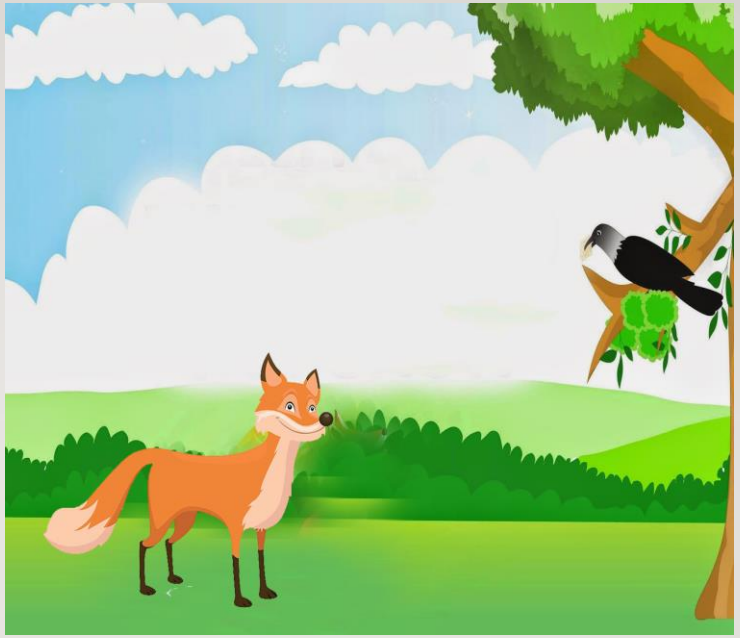

जार में कंचे देखना :- राह में चलते-चलते उसने एक दुकान की अलमारी में काँच के बड़े-बड़े जार देखे जिनमें चाकलेट, पिपरमेंट और बिस्कुट थे | उसकी नज़र उन पर तो नहीं टिकी | वह आकर्षित हुआ उस जार से जिसमें कंचे रखे थे | हरी लकीर वाले बढ़िया सफ़ेद गोल कंचे | बड़े आँवले जैसे | वह तो मानो कंचों की दुनिया में ही खो गया | उसे देखते-देखते लगा कि वह जार आसमान-सा बड़ा होने लगा और वह भी उसके भीतर आ गया | वहाँ कोई लड़का न था फिर भी उसे वह पसंद आ रहा था वैसे भी उसे अकेले खेलने की आदत थी क्योंकि छोटी बहन की मृत्यु के पश्चात् वह अकेला ही खेलता था |

वास्तविकता में आना :- थोड़ी देर तक तो वह कंचों की दुनिया में ही खोया रहा | जब दुकानदार ने उसे आवाज़ लगाई कि लड़के तू तो जार को नीचे ही गिरा देगा तो वह चौंक उठा | दुकानदार ने पूछा कि 'क्या कंचा चाहिए?' तो उसने 'नहीं लेना' सोचकर सर हिला दिया |

विद्यालय की घंटी बजना :- स्कूल की घंटी बजी वह बस्ता थामे दौड़ पड़ा | क्योंकि उसे मालूम था कि देर से पहुँचने वालों को पिछली बैंच पर बैठना पड़ता है | उस दिन देर से पहुँचाने पर वह स्वयं ही सबसे पीछे जाकर बैठ गया |

मित्रों को खोजना :- पिछले बैंच पर बैठने पर भी वह सभी मित्रों को देखने लगा कि कौन कहाँ बैठा है | रामन, अन्नू, मल्लिका उसने सबको देखा लेकिन न जाने क्यों उसकी आँखें जॉर्ज को खोज रही थी | उसका दिमाग तो कंचों में खोया था और उसे पता था कि कंचों में जॉर्ज को मात नहीं दे सकता | रामन से उसे पता चल गया कि वह आज बीमार है इसलिए नहीं आया |

मास्टर जी का पढ़ाना :- अप्पू ने हड़बड़ी में पुस्तक खोली और जाना कि मास्टर जी 'रेलगाड़ी' का पाठ पढ़ा रहे हैं | वे बताते जा रहे हैं कि तुम में से कई बच्चों ने रेलगाड़ी देखी होगी | इसे भाप की गाड़ी भी कहते हैं | इसमें पानी डालने के स्थान को बॉयलर कहते हैं | यह एक लोहे का बड़ा पीपा होता है |

शब्दार्थ

घनी – गहरी
खनकता – आवाज़ करता
केन्द्रित – एकाग्रचित्त
नौ दो ग्यारह होना – भाग जाना
बुद्दू – बेवकूफ
आकृष्ट – अपनी ओर खींचना
टुकर-टुकर – लगातार
ताकता – देखता
खूबसूरत – सुन्दर
भीतर – अन्दर
बिखेरना – फैलाना
निषेध – मना
स्पर्श – छूना
अहसास – महसूस करना
मात खाना – हार जाना
मुट्ठी – उँगलियों को हथेलियों में बंद करना

हड़बड़ी – जल्दी में
सबक – पाठ
खास – विशेष
बॉयलर – जिसमें पानी गरम किया जाता है
पीपा – लोहे का बड़े आकर का डिब्बा
अनुभव – ज्ञान होना
दम घुटना – साँस रुकना
खामोश – चुप
कर्मठ – कर्तव्यशील
जवाब – उत्तर
सकपका – घबरा जाना
आँखों में चिंगारियाँ सुलगना – बहुत क्रोध आना
कोशिश – प्रयत्न
हँसी उड़ाना – मज़ाक उड़ाना
शंका – संशय

प्रश्न/उत्तर भाग

प्रश्न 1. कंचे जब ज़ोर से निकलकर अप्पू के मन की कल्पना में समा जाते हैं, तब क्या होता है?

उत्तर-

कंचे जब ज़ार से निकलकर अप्पू के मन की कल्पना में समा जाते हैं, तब वह जार और कंचों के अलावे कुछ नहीं सोचता है। उसे कल्पना की दुनिया में लगता है कि जैसे कंचों का ज़ार बड़ा होकर आसमान-सा बड़ा हो गया और वह उसके भीतर समा गया। वह अकेला ही कंचे चारों ओर बिखेरता हुआ मज़े से खेल रहा था। आँवले सा गोल हरी लकीर वाले सफ़ेद गोल कंचे उसके दिमाग में पूरी तरह छा गए। मास्टर जी पाठ में रेलगाड़ी' के बारे में पढ़ा रहे थे लेकिन उसका ध्यान पढ़ाई में नहीं था। वह तो केवल कंचों के बारे में सोच रहा था, इसके लिए उसने मास्टर जी से डाँट भी खाई ।

प्रश्न 2.

दुकानदार और ड्राइवर के सामने अप्पू की क्या स्थिति है? वे दोनों उसको देखकर पहले परेशान होते हैं, फिर हँसते हैं। कारण बताइए।

उत्तर

दुकानदार व ड्राइवर के सामने अप्पू एक छोटा बच्चा है जो अपनी ही दुनिया में मस्त है। दुकानदार उसे देखकर पहले परेशान होता है। वह कंचे देख तो रहा है लेकिन खरीद नहीं रहा। फिर जैसे ही अप्पू ने कंचे खरीदे तो वह हँस दिया। ऐसे ही जब अप्पू के कंचे सड़क पर बिखर जाते हैं तो तेज़ रफ़्तार से आती कार का ड्राइवर यह देखकर परेशान हो जाता है कि वह दुर्घटना की परवाह किए बिना, सड़क पर कंचे बीन रहा है। लेकिन जैसे ही अप्पू उसे इशारा करके अपना कंचा दिखाता है तो वह उसकी बचपन की शरारत समझकर हँसने लगता है।

प्रश्न 3.
मास्टर जी की आवाज़ अब कम ऊँची थी। वे रेलगाड़ी के बारे में बता रहे थे। मास्टर जी की आवाज़ धीमी क्यों हो गई होगी? लिखिए।
उत्तर-
जब मास्टर जी ने कक्षा के बच्चों को रेलगाड़ी का पाठ पढ़ाना शुरू किया था, तब उनकी आवाज ऊँची थी क्योंकि वे सभी बच्चों का ध्यान आकर्षित करना चाहते थे। ध्यानपूर्वक पाठ को सुन सकें। जब पाठ शुरू हो गया तब बच्चे ध्यानपूर्वक उनकी बातें सुनने लगे तो उनकी आवाज़ धीमी हो गई।

कहानी से आगे

प्रश्न 1.
कंचे, गिल्ली-डंडा, गेंदतड़ी (पिट्ठू) जैसे गली-मोहल्लों के कई खेल ऐसे हैं जो बच्चों में बहुत लोकप्रिय हैं। आपके इलाके में ऐसे कौन-कौन से खेल खेले जाते हैं? उनकी एक सूची बनाइए।
उत्तर-
हमारे इलाके में अब क्रिकेट, बैडमिंटन, फुटबॉल, खो-खो, वॉलीबाल, टेनिस आदि अधिक खेले जाते हैं।

प्रश्न 2.

किसी एक खेल को खेले जाने की विधि को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर

क्रिकेट खेलने की विधि-क्रिकेट का मैच दो टीमें खेलती हैं। दोनों टीमों में ग्यारह-ग्यारह खिलाड़ी होते। हैं। एक टीम बल्लेबाजी करती है और दूसरी टीम गेंदबाजी व क्षेत्ररक्षण। इस खेल में तीन निर्णायक होते हैं, दो मैदान में व एक दूर बैठकर कृत्रिम यंत्र कैमरे से निरीक्षण करता है। इस खेल में बल्लेबाज जीतने हेतु रन बनाते हैं। खिलाड़ी एक रन, दो रन, चौका व छक्का मारकर रनों की संख्या बढ़ाते हैं। दोनों टीमें बारी-बारी से खेलती हैं। जो टीम अधिक रन बनाती है वह जीत जाती है। इस खेल में चार अतिरिक्त खिलाड़ी भी होते हैं जो आवश्यकता पड़ने पर खेलते हैं। यह खेल एकदिवसीय व पंचदिवसीय खेला जाता है। इस खेल की लोकप्रियता दिन-प्रति-दिन बढ़ती जा रही है।

धन्यवाद